

श्रीः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।  
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

॥ श्रीमहावीरवैभवम् ॥  
(श्रीरघुवीरगद्यम्)

*This document\* has been prepared by*

***Sunder Kidambi***

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

---

\*This was typeset using L<sup>A</sup>T<sub>E</sub>X and the **skt** font.

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमहावीरवैभवम् ॥ (श्रीरघुवीरगद्यम्)

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।  
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥  
जयत्याश्रितसंत्रासध्वान्तविध्वंसनोदयः।  
प्रभावान् सीतया देव्या परमव्योमभास्करः॥

### बालकाण्डम्

जय जय महावीर !  
महाधीर धौरेय !  
देवासुर समर समय समुदित निखिल निर्जर निर्धारित निरवधिक  
माहात्म्य !  
दशवदन दमित दैवत परिषदभ्यर्थित दाशरथिभाव !  
दिनकर कुल कमल दिवाकर !  
दिविषदधिपति रण सहचरण चतुर दशरथ चरमऋण विमोचन !  
कोसलसुता कुमार भाव कञ्चुकित कारणाकार !  
कौमार केळि गोपायित कौशिकाध्वर !  
रणाध्वर धुर्य भव्य दिव्यास्त्र बृन्द वन्दित !  
प्रणत जन विमत विमथन दुर्लळित दोर्लळित !  
तनुतर विशिख विताडन विघटित विशरारु शरारु ताटका ताटकेय !  
जडकिरण शकलधर जटिल नट पति मकुटतट नटनपट्ट  
विबुधसरिदतिबहुळ मधुगळन ललित पद नळिनरज उपमृदित  
निजवृजिन जहदुपल तनुरुचिर परममुनिवर युवति नुत !

कुशिकसूत कथित विदित नव विविध कथ !  
 मैथिल नगर सुलोचना लोचन चकोर चन्द्र !  
 खण्डपरशु कोदण्ड प्रकाण्ड खण्डन शौण्ड भुजदण्ड !  
 चण्डकर किरण मण्डल बोधित पुण्डरीक वन रुचि लुण्टाक लोचन !  
 मोचित जनक हृदय शङ्कातङ्क !  
 परिहृत निखिल नरपति वरण जनकदुहितृ कुचतट विहरण समुचित  
 करतल !  
 शतकोटि शतगुण कठिन परशुधर मुनिवर करधृत दुरवनमतम निज  
 धनुराकर्षण प्रकाशित पारमेष्ठ्य !  
 क्रतुहरशिखरि कन्तुक विहृत्युन्मुख जगदरुन्तुद जितहरि दन्ति दन्त  
 दन्तुर दशवदन दमन कुशल दशशतभुज मुख नृपतिकुल रुधिर झर  
 भरित पृथुतर तटाक तर्पित पितृक भृगुपति सुगति विहतिकर नत  
 परुडिषु परिघ !

### अयोध्याकाण्डम्

अनृत भय मुषित हृदय पितृ वचन पालन प्रतिज्ञावज्ञात यौवराज्य !  
 निषाद राज सौहृद सूचित सौशील्य सागर !  
 भरद्वाज शासन परिगृहीत विचित्र चित्रकूट गिरि कटक तट  
 रम्यावसथ !  
 अनन्यशासनीय !  
 प्रणत भरत मकुटतट सुघटित पादुकाग्याभिषेक निर्वर्तित सर्व लोक  
 योग क्षेम !  
 पिशित रुचि विहित दुरित वलमथन तनय बलिभुगनुगति सरभस शयन  
 तृण शकल परिपतन भय चकित सकल सुर मुनिवर बहुमत महास्त्र  
 सामर्थ्य !  
 द्रुहिण हर वलमथन दुरारक्ष शरलक्ष !  
 दण्डका तपोवन जङ्गम पारिजात !

विराध हरिण शार्दूल !

विलुब्धित बहुफल मख कलम रजनिचर मृग मृगयारम्भ संभृत  
चीरभृदनुरोध !

त्रिशिरः शिरस्त्रितय तिमिर निरास वासरकर !

दूषण जलनिधि शोषण तोषित ऋषिगण घोषित विजय घोषण !

खरतर खर तरु खण्डन चण्ड पवन !

द्विसप्त रक्षःसहस्र नळवन विलोलन महाकलम !

असहाय शूर !

अनपाय साहस !

महित महामृथ दर्शन मुदित मैथिली दृढतर परिरम्भण विभव विरोपित  
विकट वीरव्रण !

मारीच माया मृग चर्म परिकर्मित निर्भर दर्भास्तरण !

विक्रम यशो लाभ विक्रीत जीवित गृध्रराज देह दिधक्षा लक्षित भक्तजन  
दाक्षिण्य !

कल्पित विबुधभाव कबन्धाभिनन्दित !

अवन्ध्य महिम मुनिजन भजन मुषित हृदय कलुष शबरी मोक्ष  
साक्षिभूत !

### किष्किन्धाकाण्डम्

प्रभञ्जन तनय भावुक भाषित रञ्जित हृदय !

तरणिसुत शरणागति परतन्त्रीकृत स्वातन्त्र्य !

दृढघटित कैलास कोटि विकट दुन्दुभि कङ्काळ कूट दूर विक्षेप दक्ष  
दक्षिणेतर पादाङ्गुष्ठ दरचलन विश्वस्त सुहृदाशय !

अतिपृथुल बहु विटपि गिरि धरणि विवर युगपदुदय विवृत चित्रपुङ्ख  
वैचित्र्य !

विपुल भुज शैलमूल निबिड निपीडित रावण रणरणक जनक चतुरुदधि  
विहरण चतुर कपिकुलपति हृदय विशाल शिलातल दारण दारुण  
शिलीमुख !

सुन्दरकाण्डम्

अपार पारावार परिखा परिवृत परपुर परिसृत दव दहन जवन पवनभव  
कपिवर परिष्वङ्ग भावित सर्वस्व दान !

युद्धकाण्डम्

अहित सहोदर रक्षः परिग्रह विसंवादि विविध सचिव विस्रम्भण समय  
संरम्भ समुज्जृम्भित सर्वेश्वर भाव !

सकृत् प्रपन्न जन संरक्षण दीक्षित !

वीर !

सत्यव्रत !

प्रतिशयन भूमिका भूषित पयोधि पुक्किन !

प्रळय शिखि परुष विशिख शिखा शोषिताकूपार वारिपूर !

प्रबल रिपु कलह कुतुक चटुल कपिकुल करतल तूलित हत गिरि निकर  
साधित सेतुपथ सीमा सीमन्तित समुद्र !

द्रुतगति तरुमृग वरूथिनी निरुद्ध लङ्कावरोध वेपथु लास्य लीलोपदेश  
देशिक धनुर्ज्याघोष !

गगन चर कनक गिरि गरिम धर निगममय निज गरुड गरुदनिल लव  
गळित विष वदन शर कदन !

अकृतचर वनचर रणकरण वैलक्ष्य कूणिताक्ष बहुविध रक्षो बलाध्यक्ष  
वक्षः कवाट पाटन पटिम साटोप कोपावलेप !

कटुरटदटनि टङ्कृति चटुल कठोर कार्मुख विनिर्गत विशङ्कट  
विशिख विताडन विघटित मकुट विह्वल विश्रवस्तनय विश्रम समय  
विश्राणन विख्यात विक्रम !

कुम्भकर्ण कुलगिरि विदळन दम्भोळि भूत निःशङ्क कङ्कपत्र !  
 अभिचरण हुतवह परिचरण विघटन सरभस परिपतद् अपरिमित  
 कपिबल जलधि लहरि कलकलरव कुपित मघवजि  
 दमिहननकृदनुज साक्षिक राक्षस द्वन्द्वयुद्ध !  
 अप्रतिद्वन्द्व पौरुष !  
 त्र्यम्बक समधिक घोरास्त्राडम्बर !  
 सारथि हृत रथ सत्रप शात्रव सत्यापित प्रताप !  
 शित शर कृत लवन दशमुख मुख दशक निपतन पुनरुदय दर गळित  
 जनित दर तरळ हरिहय नयन नळिनवन रुचि खचित खतल निपतित  
 सुरतरु कुसुम वितति सुरमित रथ पथ !  
 अखिल जगदधिक भुज बल वर बल दश लपन लपन दशक लवन  
 जनित कदन परवश रजनिचर युवति विलपन वचन समविषय  
 निगम शिखर निकर मुखर मुख मुनि वर परिपणित !  
 अभिगत शतमुख हुतवह पितृपति निर्ऋति वरुण पवन धनद गिरिश  
 मुख सुरपति नृति मुदित !  
 अमित मति विधि विदित कथित निज विभव जलधि पृषत लव !  
 विगत भय विबुध परिबृढ विबोधित वीरशयन शायित वानर पृतनौघ !  
 स्व समय विघटित सुघटित सहृदय सहधर्म चारिणीक !  
 विभीषण वशंवदीकृत लङ्केश्वर्य !  
 निष्पन्न कृत्य !  
 ख पुष्पित रिपु पक्ष !  
 पुष्पक रभस गति गोष्पदीकृत गगनार्णव !  
 प्रतिज्ञार्णव तरण कृत क्षण भरत मनोरथ संहित सिंहासनाधि रूढ !  
 स्वामिन् !  
 राघव सिंह !

उत्तरकाण्डम्

हाटक गिरि कटक लडह पाद पीठ निकट तट परिलुठित निखिल  
नृपति किरीट कोटि विविध मणि गण किरण निकर नीराजित चरण  
राजीव !

दिव्य भौमायोध्याधिदैवत !

पितृ वध कुपित परशु धर मुनि विहित नृप हनन कदन पूर्व काल प्रभव  
शत गुण प्रतिष्ठापित धार्मिक राजवंश !

शुभ चरित रत भरत खर्वित गर्व गन्धर्व यूथ गीत विजय गाथा शत !

शासित मधुसुत शत्रुघ्न सेवित !

कुश लव परिगृहीत कुल गाथा विशेष !

विधिवश परिणमदमर भणिति कविवर रचित निज चरित निबन्धन  
निशमन निर्वृत !

सर्व जन सम्मानित !

पुनरुपस्थापित विमान वर विश्राणन प्रीणित वैश्रवण विश्रावित  
यशःप्रपञ्च !

पञ्चतापन्न मुनिकुमार संजीवनामृत !

त्रेतायुग प्रवर्तित कार्तियुग वृत्तान्त !

अविकल बहुसुवर्ण हयमख सहस्र निर्वहण निर्वर्तित निज  
वर्णाश्रमधर्म !

सर्व कर्म समाराध्य !

सनातन धर्म !

साकेत जनपद जनि धनिक जङ्गम तदितर जन्तुजात दिव्य गति दान  
दर्शित नित्य निःसीम वैभव !

भव तपन तापित भक्तजन भद्राराम !

श्रीरामभद्र !

नमस्ते पुनस्ते नमः !

चतुर्मुखेश्वरमुखैः पुत्रपौत्रादिशालिने।  
नमः सीतासमेताय रामाय गृहमेधिने ॥

कविकथक सिंहकथितं कठोर सुकुमार गुम्भ गम्भीरम्।  
भव भय भेषजमेतत् पठत महावीर वैभवं सुधियः ॥

॥ इति श्रीमहावीरवैभवं समाप्तम् ॥

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने।  
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः ॥